# देश की रक्षा हम करेंगे, हम करेंगे

– जगदीश सिंह दफौटी

***हम विद्यालयों में लोकतांत्रिक मूल्यों को लेकर काफी काम करते हैं लेकिन कई बार अवचेतन की जकड़ ऐसी होती है कि लोकतांत्रिक होने के प्रयासों में ही दिक्कत होती है जो अक्सर नज़र भी नहीं आती।***

विगत वर्ष सेवारत प्रशिक्षण में प्रतिनाग करने बी आरसी गया। एकल अध्यापक होने के कारण सापेक्षी विद्यालय को अध्यापक की व्यवस्था की गई। छह दिवसीय प्रशिक्षण के बाद जब विद्यालय लौटा तो बच्चों की कुछ शिकायतें थी। विद्यालय में बच्चों द्वारा छोटे–छोटे गमला में फूल एवं पौधे लगाये गए हैं। जिनको सुरक्षा की दृष्टि से नियमित रूप से कक्षा में रखा जाता है। (जिससे सुरक्षा एवं विस्तृत विषय है) प्रातः बाहर बरामदे में रख जाता है। जिनके अंदर बाहर रखने में व सफाई करने के निर्देश व भाषण लगभग रोज ही दिए जाते हैं। जैसे एक एक ले जाओ, हिलाना नहीं, गिराना नहीं आदि। यह कार्य विगत दो वर्षों से चल रहा था। मेरा पूरा विश्वास था कि बच्चे संवैधानिक कर्तव्य पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति संवेदनशील बन रहे हैं। मैं गर्व से इन गमलों को उगाने के उद्देश्य लोगों को समझाता। मेरा दावा था कि कम से कम ये बच्चे दूसरों के लगाये गमलों व पौधों को क्षति तो नहीं पहुंचायेंगे।

शिकायतों में सबसे पहली शिकायत यह थी कि मेरी अनुपस्थिति में कुछ बच्चों द्वारा गमलों को लात मार कर इधर–उधर फेंका गया। इसके अतिरिक्त वो सब हुआ जिसका उन्हें अवसर मिला। विद्यालय में प्रार्थना सभा शुरू हुई। देशभक्ति गीत और समूह गीत राष्ट्रगान के तुरन्त बाद नारे लगाए गए जो कि रोज ही लगते हैं। देश की रक्षा कौन करेगा, हम करेंगे–हम करेंगे। मेरे अंदर अपने शिक्षण के उद्देश्यों का पूरा न होना घुमड़ रहा था। बीच में ही रोकते हुए बोला बन्द करो ये सब, क्या देश की रक्षा करोगे तुम? अपने छोटे गमलों व पौधों की सुरक्षा नही कर पाये। देश की रक्षा का मतलब जानते हो? थोड़ी देर सोचा तो पाया जानेंगे कैसे इस नारे पर तो इनसे बात

ही नहीं हुई है। फिर उनसे बात की गयी। अपने आस पास की हर वस्तु की सुरक्षा ही देश की सुरक्षा है। वो हमारे घर, गांव और विद्यालय यहां तक कि अपनी कॉपी, किताब, पेंसिल की सुरक्षा भी देश की सुरक्षा है। इसको भी समझने की आवश्यकता है। पेंसिल व कागज बनाने में लकड़ी का उपयोग होता है। अगर हम अनावश्यक रूप से इसे बर्बाद करेंगे तो हम देश को ही क्षति पहुंचाते हैं। ये नारा तो वर्षों से सुन रहा था लेकिन अब तक बच्चों के बीच चर्चा में नही आया था। इस अनुभव से लगा कि देश, नागरिक, सुरक्षा, सेवा, काम, समूह गीत, देशभक्ति गीतों व नियमों के उद्देश्यों पर बातें होनी आवश्यक है।

इस घटना के बाद भी मैं यह दावा नहीं कर सकता हूं कि सभी बच्चे गमलों की सुरक्षा एक समान उद्देश्य से कर रहे थे। चाहे वे शिकायत करने वाले बच्चे ही क्यों न हों। शिकायत करने के पीछे खुद को अध्यापक का करीबी जताना भी हो सकता है। यह 'कुछ खास' अलोकतांत्रिक मूल्य है। ऐसा शिक्षाविदों का मानना है। जो आज समाज में अक्सर देखने को मिलता है। कुछ लोग करीबी

कहलाते हैं। इसके कारण कई बार प्रतिभा का दमन हो जाता है। इसके अतिरिक्त थोपा गया अनुशासन गैर जिम्मेदार हो सकता है। जिसके कारण अवसर मिलते ही बच्चों द्वारा उस कार्य के प्रति अपनी नाराजगी प्रदर्शित की गयी। ये सब बातें ही हैं जिनके कारण गमले या पौधों को सुरक्षा के लिए कमरे में रखना पड़ता है क्योंकि छुट्टी के बाद हमारे समाज के लोग उन पौधों को क्षति पहुंचाते हैं। जिन फूलों व पौधों को बाहर होना चाहिए था वो अंदर हैं। 'देश' की रक्षा तन से करेंगे, मन से करेंगे, धन से करेंगे का दावा है। लेकिन देश की सुरक्षा मन ही मन करेंगे का भाव भी दिखता है। इसके बाद भी देश व पर्यावरण के प्रति कुछ लोगों की जिम्मेदारी के भाव को नकारा नहीं जा सकता है। आवश्यकता कारणों को समझने की है।

संविधान के 69 वें जन्म दिवस को धूमधाम से मनाने के बाद बच्चे पास के इंटर कॉलेज में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने चले गए। विद्यालय के कार्यक्रम स्थल में कुर्सी, टेबल और चटाइयां बिछी पड़ी हैं। ऑफिस एवं अन्य कक्षा कक्षों के खिड़की–दरवाजे खुले हैं। अन्य दिनों ये सब कार्य बच्चे अपने–अपने विभागों के अनुसार करते थे। आज कार्यक्रम के कारण उन्हें छोड़कर जाना पड़ा। सारा कार्य अध्यापक एवं भोजन माताओं के सिर पर आ गया। जिस कारण भोजन माताएं तो बड़बड़ाती हुई काम में लगी। अध्यापक जो कल तक चटाई को सलीके से तह चाहता था उसे भी आज यह काम करते हुए पता चला कि चटाई की तह लगाना भी कार्य है। कुर्सी–टेबलों में भार होता है। खिड़कियां–दरवाजे बन्द करना एवं ताला लगाने में भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

अक्सर हम लोकतांत्रिक प्रकियाओं पर चर्चायें करते हैं। विद्यालय स्तर पर मूल्यों को विकसित करने की बात भी उसमें शामिल रहती है। लेकिन कई बार कार्य विभाजन के समय में स्वयं को अलग कर लेता हूं। कार्य का विभाजन केवल बच्चों में करता हूं। जैसे विद्यालयी कार्य सफाई, झाड़ू लगाना, कुर्सी मेज अन्दर–बाहर रखना, अपनी कुर्सी साफ करना, कार्यालय या कक्षों की सफाई, बागवानी, फूलों में पानी देना, खुदाई करना, पुस्तकालय की देख–रेख करना और टॉयलेट सफाई आदि कार्यों का विभाजन छात्रों में ही किया जाता है। मैं स्वयं निरीक्षक की भूमिका में रहता हूं। इसके पीछे मेरा तर्क है कि मैं बच्चों में उक्त मूल्य विकसित करने के लिए उनसे चर्चा करने के बाद कार्य विभाजन करता हूं। इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि कार्य बदलते रहेंगे। लेकिन ये भूल जाता हूं कि मेरी भूमिका क्या है? मेरा केवल निरीक्षक की भूमिका में होना इस प्रक्रिया को अलोकतांत्रिक बना गया और मुझे पता ही नहीं चला। इससे जो मूल्य बच्चों में विकसित होने थे उसके विपरीत मूल्य विकसित हो रहे हैं। जैसे दूसरों से कार्य करवाना, जिम्मेदारी खुद लेने से बचना। शिक्षा पर जब भी चर्चा होती है। इसमें अध्यापक को एक रोल मॉडल के रूप में देखा जाता है। इस बात को सभी शिक्षाविद स्वीकार करते हैं। लेकिन विद्यालय में मेरे द्वारा अपनाई गई उक्त प्रक्रियाओं में तो मेरा रोल बहुत कम था। जिस वजह से मॉडल का भी वैसा ही बनना स्वाभाविक है। कहा जा सकता है कि दोहरा चरित्र व असंवेदनशीलता जैसे मूल्यों के पीछे भी लोकतांत्रिक मूल्यों का अभाव छिपा है।

इनके पीछे के कारणों की पड़ताल करने पर पाया कि अपने लिए नियमों में शिथिलता व दूसरों के लिए सख्त होना। खुद आदेश देने की भूमिका में रहना। जिसका सीधा प्रभाव बच्चों में दिखता है। वे अपने से छोटी कक्षाओं के बच्चों को निर्देशित करते नजर आते हैं।

इसके अतिरिक्त सुन्दर, सुसज्जित कार्यालय में कीमती कुर्सियां व मेज। फर्श पर बिछी मैट, खिड़कियों के पर्दे, मेजपोश, कुशन युक्त फर्नीचर, पानी की बोतलें, चाय के लिए स्पेशल कप, अलग टॉयलट आदि। और दूसरी ओर बच्चों के लिए जूट की चटाई, गड्डे युक्त फर्श आदि का होना। भोजन अलग अपने कार्यालय में करना, थाली गिलास स्वयं साफ न करना आदि। जबकि विद्यालय एक ही है। अंतर केवल शारीरिक शक्ति व उम्र का है। ये प्रक्रियायें भी अलोकतंत्रिक व शायद चरित्र निर्माण के दावे को खोखला करने वाली हों। अगली प्रकिया और भी

जटिल है। वह भाषा व व्यवहार है। जो जीवन का प्रमुख अंग है। बच्चों की ढेरों गलतियां हमें दिखती हैं। जबकि गलती वही करेगा जो सीखने की प्रक्रिया में होगा। लेकिन अधिकतम के समाधान सुझाने की भूमिका में होने के कारण गलती के स्तर के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। उसी के अनुसार आवाज का बढ़ना व भाषा में कटुता या उपहास का होना खतरनाक व अलोकतांत्रिक है। आगे चलकर यह भेद–भाव घर–परिवार समाज में देखने को मिलता है। परिवार के मुखिया या पुरुषों को पहले भोजन देना। उनके कपड़े व कमरे को स्वच्छ रखना। कार्यों के विभाजन में अंतर व घर में हर व्यक्ति के लिए अलग नियमों का होना व वर्ग के अनुसार शिथिलताओं के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

कक्षा में जब भी किसी विषय पर बात होती है तो स्वाभाविक प्रक्रिया में कुछ प्रश्न किये जाते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर कुछ बच्चे तपाक से दे डालते हैं। उन्हें शाबासी भी मिलती है। बाकी बच्चे भी उसका उत्तर सोच रहे होते हैं। तब तक उसका पड़ोसी उत्तर दे चुका होता है।

मेरे स्कूल में कक्षा 2 के छात्र राघव, दीपेश का अनुभव लेकर बात को आगे बढा रहा हूं। जब भी गणित पर कुछ बातें होती हैं तो दीपेश खुश हो जाता है। यों कहिये कि गणित सुनते ही वो ज्यादा सक्रिय हो जाता है। राघव सहम सा जाता है। जबकि हिंदी एवं अंग्रेजी विषय में मेरे अनुसार राघव की जबरदस्त पकड़ है। जहां तक उसकी रचनात्मकता पर बात करें तो किसी भी बिंदु पर अपनी बात रख पाता है। एक बार सुनी कहानी को खुद सुना सकता है। अपने स्तर की कहानी कविता भी रच लेता है। जो भी उससे मिलता है वह प्रभावित हो जाता है। कहा जा सकता है कल्पना करना, चीजों को खुद की नजर से देखना या सोचना, अनुमान लगाना, तर्क करना, वस्तुओं का आपस में सम्बन्ध स्थापित करना जैसे बहुत से गणितीय कौशल विकसित हैं। फिर भी गणित की बात आते ही उसके हाव–भावों का बदलना सोचने को मजबूर करता है।

इस घटना पर ध्यान दिया तो पाया कि कक्षा–कक्ष में गणित शिक्षण में भारी गड़बड़ी है। अक्सर जब भी गणित का कोई प्रश्न पूछा जा रहा होता है या प्रश्न हल करने को दिया जाता है। दूसरा बच्चा दीपेश जल्दी उत्तर दे देता है या प्रश्न को लिखित हल कर लेता है। जिसके कारण उसे बहुत अच्छा, होशियार जैसे शब्दों से अलंकृत किया जा रहा होता है। निश्चित रूप से उसका आत्म विश्वास बढ़ रहा है। विषय के प्रति रुचि बढ़ रही है। लेकिन उसके साथियों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। पहला यह कि दीपेश अन्य बच्चों को अपने अनुभव सुनाने के अवसर नहीं दे रहा है। वह दूसरे बच्चों के सोचने से पहले उत्तर देकर बात समाप्त कर देता है। जिसके चलते दूसरे बच्चे अनुमान लगाने व समस्या समाधान के लिये सोच नही पा रहे हैं। इसके लिए मेरे द्वारा ही उसके सही उत्तरों को प्रोत्साहित किया जाता रहा है। लेकिन इसके विपरीत प्रभाव से अन्य बच्चों के अवसरों पर हस्तक्षेप हो रहा है। मैं इसे समझ ही नहीं पा रहा था। इसका अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता है कि प्रोत्साहित करना गलत है। लेकिन प्रोत्साहन से दूसरों के हित प्रभावित न हों, यह समझना शायद आवश्यक होगा। दूसरी, बात दीपेश के अन्य साथियों ने सोचना छोड़ दिया। जो दीपेश बताएगा उसे दोहरा देंगे या उसी का अनुसरण करेंगे। वे दीपेश की बातों को सत्य समझने लगते हैं। यह मूल्य अन्य को अपनी बात रखने से रोक रहा है। क्योंकि वे एक धारणा बना चुके हैं कि दीपेश हमेशा सही बताता है, जो बहुत बड़ा मिथक है।

इस मिथक के चलते दीपेश अन्य बच्चों को चुपके से उत्तर भी बताने लगा है। उसके एवज में वे अपने साथियों से कुछ वस्तुओं की सौदेबाजी कर रहा है। जैसे रबर–पेंसिल या कोई खाने–पीने की वस्तु जो उसे पसन्द है। यहां फिर मदद के रूप में कुछ लेने–देने का मूल्य विकसित हो रहा है। यही हाल राघव का हिंदी या अंग्रेजी विषय में है। यहां राघव अन्य बच्चों के अवसरों को प्रभावित कर रहा है। अध्यापक का प्रिय बना है। हमेशा खुद ही जवाब देता है। अन्य बच्चों की बात (अभिव्यक्ति) को दबाने का कार्य कर रहा है। इसके चलते वह कई बार झूठी बातों को भी बढ़िया तरीके से बोल लेता हैं। क्योंकि उसकी बातों को सुना जाता है इसलिए वह अपना प्रभाव और ज्यादा बनाने के लिए कोशिश करता है।

यहां मेरे द्वारा यह समझने की कोशिश की गयी है कि गणित व भाषा के उद्देश्यों को समझने की प्रकिया में शिक्षा के महत्वपूर्ण लोकतांन्त्रिक मूल्य के विपरीत कुछ अलोकतांत्रिक मूल्य कैसे विकसित होते हैं। जिनका मुझे पता ही नहीं चलता या देर हो जाती है। ये सब कक्ष में घटित घटनाएं होती है।

*(इस आलेख में प्रयुक्त बच्चों के नाम काल्पनिक हैं)*

*(लेखक प्राथमिक विद्यालय सिंघर्तोला बागेश्वर में सहायक अध्यापक के पद पर हैं)*